

सन्धि- ज्ञानम्

संस्कृत में जब कोई दो स्वर साथ-साथ आते हों, या किसी व्यंजन के साथ दूसरा व्यंजन आता हो, या विसर्ग के आगे कोई वर्णन हो तो वर्णों में भिन्न-भिन्न प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि-

“व्यवधान-रहित वर्णों के मिलने पर जब उनमें कुछ परिवर्तन होता है, तो उसे सन्धि कहते हैं।”

भेद :- “यह बात स्पष्ट है कि दो वर्णों का मेल ही सन्धि है।” उसके मुख्य-रूप में तीन भेद माने जाते हैं :-

- (1) स्वर - सन्धि।
- (2) व्यंजन - सन्धि।
- (3) विसर्ग - सन्धि।

स्वर- सन्धि (अच्- सन्धि)

“दो स्वरों के मेल से जो विकार होता है, उसे “स्वर सन्धि” कहते हैं।” जैसे-विद्या + आलयः=विद्यालयः। यहाँ “द्या” का “आ” और “आलय” का “आ” दोनों मिलकर “आ” हो गये हैं।

स्वर-सन्धि में निम्नलिखित सन्धियाँ मुख्य हैं :-

1. दीर्घ सन्धि।
2. गुण सन्धि।
3. वृद्धि सन्धि।
4. यण् सन्धि।
5. अयादि सन्धि।
6. पूर्व रूप सन्धि।
7. प्रकृतिभाव सन्धि।

1. दीर्घ- सन्धि (अकः सवर्णो दीर्घः)

यदि दो समान मूल स्वर (अ, इ, उ, ऋ) चाहे वे ह्रस्व या दीर्घ हों, साथ आये तो उन दोनों के स्थान पर वही दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे :-

(क) अ + अ = आ, न + अस्ति = नास्ति।

अ + आ = आ, हिम + आलयः = हिमालयः।

आ + अ = आ, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी।

आ + आ = आ, विद्या + आलयः = विद्यालयः।

(ख) इ + इ = ई, मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः।

इ + ई = ई, गिरि + ईशः = गिरीशः।

ई + इ = ई, मही + इन्द्रः = महीन्द्रः।

ई + ई = ई, श्री + ईशः = श्रीशः।

- (ग) उ + उ = ऊ, गुरू + उपदेशः = गुरूपदेशः।
 उ + ऊ = ऊ, लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः।
 ऊ + उ = ऊ, वधू + उत्सवः = वधूत्सवः।
 उ + ऊ = ऊ, चम् + ऊर्जः = चमूर्जः (सेनी की शक्ति)
 (घ) ऋ + ऋ = ऋ पितृ + ऋणम् + पितर्णिम्।

2. गुण सन्धि (अदेङ् गुणः)

- संस्कृत में अत् अर्थात् (अ = अर्, अल्) तथा एङ् अर्थात् ए एवं ओ को “गुण” कहते हैं।
 (i) यह गुण-सन्धि (आद गुणः) ह्रस्व या दीर्घ “आ” के बाद यदि इ, ई, उ ऊ आयें तो उन दोनों के (पूर्व-पर के) स्थान पर क्रमशः “ए” “ओ” हो जाता है :-
 (क) अ + इ या ई = ए, देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः।
 परम + ईश्वरः = परमेश्वरः।

आ + इ या ई = ए, महा + इन्द्रः = महेन्द्रः।

रमा + ईशः = रमेशः।

(ख) उ + उ या ऊ = ओ, हित + उपदेशः = हितोपदेशः

जल + ऊर्मि = जलोर्मिः

आ + उ या ऊ = ओ, गीता + उपदेशः = गीतोपदेशः

गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः

(ii) जब “अ” अथवा “आ” के बाद “ऋ” आये तो पूर्व-पर के स्थान पर “अर्” हो जाता है।

अ + ऋ = अर्,

देव + ऋषिः = देवर्षिः।

आ + ऋ = अर्,

महा + ऋषिः = महर्षिः।

(iii) जब “अ” अथवा “आ” के बाद “लृ” आये तो पूर्व-पर के स्थान पर “अल्” हो जाता है।

अ + लृ = अल्,

तव + लृकारः = तवल्कारः।

आ + लृ = अल्,

माला + लृकारः = मालल्कारः।

3. वृद्धि-सन्धि (वृद्धिरादैच्)

“संस्कृत व्याकरण में आत् (आर्-आल्) तथा एच् (ऐ, औ) को वृद्धि कहते हैं।”

यह वृद्धि-सन्धि (वृद्धिरेचि) “अ” अथवा “आ” के बाद यदि ए-ऐ, ओ-औ हों, तो पूर्व-पर के स्थान पर क्रमशः “ऐ” और “औ” हो जाते हैं।

(क) क + ए या ऐ = ऐ, अत्र + एव + अत्रैव

देव + ऐश्वर्यम् + देवैश्वर्यम्

आ + ए या ऐ = ऐ, विद्या + एव + विद्यैव

विद्या + ऐश्वर्यम् + विद्यैश्वर्यम्

(ख) अ + ओ या औ = औ, जल + औषधः = जलोषधः

धर्म + औदार्यम् + धर्मौदार्यम्

आ + ओ या औ = औ, महा + औषधिः + महौषधिः

महा + औत्सुक्यम् + महौत्सुक्यम्

4. यण्-सन्धि (इ को यण् अचि)

“संस्कृत व्याकरण में : “इ उ ऋ लृ” को “इक्” कहते हैं।”

य् व् र् ल् को, “यण्” कहते हैं।

सम्पूर्ण स्वरों को “अच्” कहते हैं।

अतः “यण्” सन्धि की परिभाषा होती कि-

यदि इक् (इ उ ऋ लृ) के बाद कोई भी अच् (स्वर) हो तो इक् (इ उ ऋ लृ) को यण् (य् व् र् ल्) हो जाता है। जैसे :-

(क) इ या ई + कोई भी स्वर (इ, ई) को छोड़ कर “य्” जैसे :-

यदि + अपि = यद्यपि।

नदी + अपि = नद्यपि।

(ख) उ या ऊ + कई भी स्वर उ ऊ को छोड़ कर “व्” जैसे :-

सु + आगतम् = स्वागतम्।

भू + आदि = भ्वादि।

(ग) ऋ + कोई स्वर ऋ को छोड़कर “र्” जैसे :-

पितृ + आगमनम् = पित्रागमनम्।

धातृ + अंशः = धात्रंशः।

(घ) लृ + कोई स्वर लृ को छोड़ कर “ल्” जैसे :-

लृ + आकृतिः = लाकृतिः

5. अयादि-सन्धि (एचोऽयवायावः)

संस्कृत व्याकरण में ए-ऐ, ओ-औ, को “एच्” कहते हैं-उस “एच्” के बाद किसी भी स्वर के आने पर उसे क्रमशः अय्, आय्, अव् हो जाते हैं। जैसे :-

(क) ए + स्वर = अय्

ऐ + स्वर = आय्

हो जाता है जैसे:-

ने + अनम् = नयनम्।

हरे + ए = हरये।

नै + अकः = नायकः।

तस्मै + आगतः = तस्मायागतः।

(ख) ओ + स्वर = अव्

औ + स्वर = आव्

हो जाता है जैसे :-

विषणो + ए = विष्णवे।

पौ + अकः = पावकः।

6. पूर्वरूप-सन्धि (एङः पदान्तादति)

संस्कृत व्याकरण में :-

ए, ओ को “एङ्” कहते हैं।

सुबन्त तथा तिङन्त को “पद” कहते हैं। इनका अन्तिम वर्णन पदान्त होता है।

अत् से “अवर्ण” का बोध होता है।

अतः-जहां पदान्त “ए” या “ओ” के बाद “आ” आ जाने पर “अ” का पूर्वरूप होता है वहाँ “पूर्वरूप-सन्धि” हो जाती है। अर्थात् “अ” वर्णन पूर्वस्थित पदान्त के ए और ओ का रूप धारण कर लेता है, तथा लुप्त हुए अकार के स्थान पर पूर्व-रूप द्योतक चिन्ह (ऽ) लगा दिया जाता है जैसे :-

(क) पदान्त “ए” + “अ” में “अ” का पूर्वरूप “ऽ”, जैसे :-

ते + अपि = तेऽपि।

वने + अद्य = वनेऽद्य।

(ख) पदान्त “ओ” + “अ” में “अ” का पूर्वरूप “ऽ”, जैसे :-

प्रभो + अत्र = प्रभोऽत्र।

सो + अद्य = सोऽद्य।

7. पररूप- सन्धि (एडि पररूपम्)

उपसर्ग के “अवर्ण” के बाद एड् (ए, ओ) हो तो पूर्व-पर के स्थान पर पररूप (ए या ओ) हो जाता है-अर्थात् “अ” जो वर्ण है वह परे स्थित ए या ओ का ही रूप धारण कर लेता है, जैसे :-

अ + ए = ए, प्र + एजते = प्रेजते।

अ + ओ = ओ, उप + ओषिति = अपोषिति।

नोट- ध्यान रहे कि यदि ई, ऊ तथा ए द्विवचनान्त पद के अन्त में हो और उनके बाद कोई-कोई स्वर आए तो सन्धि नहीं होती वे ज्यों के त्यों रह जाते हैं। संस्कृत में इसे “प्रकृति-भाव” कहते हैं :-

(क) द्विवचनान्त “ई” + स्वर में जैसे :-

मुनी + इमौ = “मुनी इमौ” यहाँ दीर्घ सन्धि नहीं होती।

(ख) द्विवचनान्त “ऊ” स्वर में जैसे :-

साधू + इमौ = “साधू इमौ” यहाँ यण् सन्धि नहीं होगी।

(ग) द्विवचनान्त “ए” + स्वर में जैसे :-

सुबन्त में-लते + इमे = “लते इमे” यहाँ अयादि सन्धि नहीं होती।

तिडत में-एधेते + एतौ = “एधेते एतौ” यहाँ अयादि सन्धि नहीं होगी।

व्यंजन- सन्धि (हल्- सन्धि)

व्यंजन का व्यंजन के साथ अथवा व्यंजन का स्वर के साथ मिलने पर जो ‘विकार’ होता है उस विकार “व्यंजन” सन्धि कहते हैं। जैसे :-

(i) व्यंजन का व्यंजन के साथ-सत् + जनः = सज्जनः।

(ii) व्यंजन का स्वर के साथ-सद् + आचारः = सदाचारः।

व्यंजन सन्धि के कुछ मुख्य-मुख्य नियम निम्नलिखित हैं :-

1. श्चुत्व- सन्धि (स्तोश्चुना श्चुः) :- जब “स्तु” अर्थात् सकार और तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) से पहले या बाद में “श्चु” अर्थात् शकार और चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) आये तो सकार को शाकार और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग होता है :-

(क) **स् और श् :-**

हरिस् + शेते = हरिश्शेते।

कस् + चित् = कश्चित्।

(ख) तवर्ग को चवर्ग :-

सत् + चित् = सच्चित् ।

सत् + जनः = सज्जनः ।

शत्रुन् + जयति = शत्रुज्जयति ।

2. ष्टुत्व- सन्धि (ष्टुना- ष्टुः) :- जब “स्तु” से पहले या बाद में ष्टु अर्थात् षकार या टवर्ग (ट् ढ् ण्) आये तो सकार को षकार तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है। जैसे :-

(क) सू को षु :-

रामस् + षष्ठ = रामषष्ठः ।

(ख) तवर्ग को टवर्ग :-

तत् + टीका = तट्टीका ।

उद् + डीयते = उड्डीयते ।

कृष् + नः = कृष्णः ।

विष् + नुः = विष्णुः ।

3. झश्त्व- सन्धि (झलां जशोऽन्ते) :- पदान्त में स्थित वर्ग के पहले अक्षर क्, च्, ट्, त्, प के बाद कोई स्वर या वर्ग के तीसरे, चौथे अक्षर या अन्तस्थ य्, र्, ल्, व या ह बाद में हों तो उनके स्थान पर “झश्त्व” हो जाता है। (संस्कृत में ज्, ब्, ग्, ङ्, ह की संज्ञा जश् है।) जैसे :-

क् को ग् — वाक् + ईशः + वागीशः ।

च् को ज् — अच् + अन्तः = अजन्तः ।

ट् को ङ् — षट् + एव = षडेव ।

त् को द् — जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः ।

प् को ब् — अप् + जः = अब्जः ।

4. अनुस्वार- सन्धि (मोऽनुस्वार) :- पद के अन्त में यदि “म्” हो और उसके बाद कोई व्यंजन हो तो “म्” के स्थान में अनुस्वार हो जाता है, (बाद में स्वर हो तो अनुस्वार नहीं होता) जैसे :-

हरिम् + बन्दे = हरिं बन्दे ।

पुस्तकम् + पठति = पुस्तकं पठति ।

(सम् + आचारः- समाचारः- यहां स्वर परे है अतः अनुस्वार नहीं हुआ) ।

5. (क) परसवर्ण- सन्धि:- (वा पदान्तस्य) पूर्व अनुस्वार से परे वर्ग का कोई भी अक्षर हो तो अनुस्वार को विकल्प से परसवर्ण हो जाता है। परसवर्ण का अर्थ है-उसी अक्षर का पांचवां अक्षर हो जाता है। जैसे :-

कवर्ग में :- किं + खादति = किङ्खादति ।

चवर्ग में :- किं + च = किञ्च ।

टवर्ग में किं + ढौकसे = किण्ढौकसे ।

तवर्ग में :- अन्नं + ददाति = अन्नन्ददाति ।

पवर्ग में :- अन्नं + पचामि = अन्नम्पचामि ।

(ख) अनुस्वार यदि परसवर्ण :- पदान्त रहित “म्” के बाद वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ तथा य्, र्, ल्, व् में से कोई भी वर्ण हो ते “म्” को परसवर्ण हो जाता है। जैसे :-

शाम् + तः = शान्तः (तवर्ग का पांचवां अक्षर 'न्')

अम् + कः = अङ्कः (कवर्ग का पांचवां अक्षर 'ङ')

कुम् + ठितः = कुण्ठितः (टवर्ग का पांचवां अक्षर 'ण') इत्यादि।

(ग) (i) तोलि :- यदि तवर्ग से परे "ल्" हो तो उसे "ल्" परसवर्ण हो जाता है। जैसे :-

तत् + लयः = तल्लयः।

तत् + लाभः = तल्लाभः।

(ii) यदि "न्" से परे "ल्" हो तो अनुनासिक "ल्" हो जाता है। जैसे :-

विद्वान् + लिखति = विद्वान्लिखति।

6. अनुनासिक- सन्धि (नश्छव्यप्रशान्) :- यदि पद के अन्त में "न्" हो और उसके आगे च्, छ्, ट्-ट् तथा त्-थ्, में से कौी वर्ण हो तो "न्" के स्थान में अनुनासिक या अनुस्वार तथा च् छ् परे रहने पर "श्", ट् ट् परे रहने पर ष्, त् थ् परे रहने पर "स्" अनुनासिक या अनुस्वार हो जाता है। जैसे :-

कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्।

महान् + ठाकुरः = महाँश्छेदः।

महान् + ठाकुरः = महाँष्ठाकुरः।

महान् + टङ्कारः = महाँष्टङ्कारः।

चक्रिन् + त्रायस्व = चक्रिंस्त्रायस्व।

पतन् + तरुः = पतंस्तरुः।

7. द्वित्व- सन्धि (डमोहस्वादचि डमुण् नित्यम्) :- यदि ह्रस्व स्वर के बाद इ, ण् न् हों, उनके बाद भी स्वर हो तो इ ण् न् को द्वित्व हो जाता है अर्थात् एक-एक और इ ण् न् आ जाता है। जैसे :-

इ - प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ् डात्मा।

ण् - सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः।

न् - पठन् + अस्ति = पठन्नास्ति।

8. चकार- सन्धि (छे च) :- ह्रस्व स्वर से परे यदि छकार आये तो छकार के साथ चकार जोड़ दिया जाता है। जैसे :-

स्व + छन्दः = स्वच्छन्दः।

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया।

9. छकार- सन्धि (शश्छोऽटि) :- यदि "तकार" के बाद "शकार" आ जाए तो "तकार को चकार" नित्य होता है तथा "शकार को छकार" विकल्प से होता है। जैसे :-

तत् + शिवः = तच्छिवः, तत्शिवः।

तत् + श्लोकेन = तच्छ्लोकेन, तत्श्लोकेन।

1. रेफ लोप सन्धि (रोरि) :- यदि रेफ (र्) से परे रेफ (र्) हो तो एक "र्" का लोप हो जाता है तथा पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है। जैसे :-

पुनर् + रमते = पुनारमते।

निर् + रोगः = नीरोगः।

साधुः (साधुर्) + रमते = साधूरमते।

नोट :- 10^{वां} का नियम विसर्ग सन्धि में भी लागू होता है। अन्तर केवल इतना ही होगा कि यहाँ र के स्थान पर ऐसा चिन्ह : होगा।

विसर्ग- सन्धि

विसर्ग (:) को वर्णों में मिलाने के लिए उसमें जो विकार आता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे :-
रामः + चलति = रामश्चलति।

विसर्ग-सन्धि के नियम इस प्रकार हैं :-

1. विसर्ग (:) को स् स् श् ष् (विसर्जनीयस्य सः) :-

(i) यदि विसर्ग के बाद त् थ् और स् हों तो विसर्ग के स्थान पर “स्” हो जाता है। जैसे :-

रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति।

देवाः + सन्ति = देवास्सन्ति।

(ii) यदि विसर्ग के बाद च् छ् या श् हो तो विसर्ग के स्थान पर “श्” हो जाता है। जैसे :-

बालः + चलति = बालश्चलति।

हरिः + शेत = हरिश्शेते।

(iii) यदि विसर्ग के बाद ट् ट् या ष् हो तो विसर्ग के स्थान पर “ष्” हो जाता है। जैसे :-

रामः + टीकते = रामष्ठीकते।

धनुः + टंकार = धनुष्टंकारः।

रामः + षष्ठः = रामष्षष्ठः।

2. विसर्ग (रु) को उ :-

(i) (दृशिच) :- यदि विसर्ग से पूर्व “आ” हो और बाद दुश् अर्थात् वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह-इनमें से कोई एक वर्ण हो तो विसर्ग (रु) को “उ” हो जाता है। जैसे :-

शिवः + वन्द्य = शिवे वन्द्यः।

यशः + दा = यशोदा।

मनः + भावः = मनोभावः।

मनः + हरः = मनोहरः।

(ii) (अतो रोरप्लुतादप्लुते) :- यदि विसर्ग से पूर्व “अ” हो और बाद में भी “अ” हो तो विसर्ग को “उ” हो जाता है। उस “उ” को पूर्ववर्ती अ के साथ गुण होकर “ओ” हो जाता है। परवर्ती “अ” को पूर्व-रूप हो जाने पर “अ” लोप वाचक चिन्ह (ऽ) लगा दिया जाता है। जैसे :-

सः + अपि = सोऽपि

रामः + अवदत् = रामोऽवदत्।

कः + अयम् = कोऽयम्

सः + अगच्छत् = सोऽगच्छत्।

3. विसर्ग लोप :- (विसर्ग का लोप हो जाने पर अतिरिक्त सन्धि नहीं होती) :-

(क) यदि विसर्ग से पूर्व में “अ” हो तो उसके बाद “अ” को छोड़ कर कोई और स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे :-

अतः + एव = अत एव।

रामः + उवाच = राम उवाच।

(ख) यदि विसर्ग से पूर्व में “आ” हो तो उसके बाद कोई स्वर अथवा वर्णन के प्रथम, द्वितीय अक्षरों को छोड़ कर अन्य कोई अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे :-

छात्राः + अप = छात्रा अपि।

जनाः + इच्छन्ति = जना इच्छन्ति।

अश्वाः + गच्छन्ति = अश्वा गच्छन्ति

जनाः + हसन्ति = जना हसन्ति।

(ग) “स” और “एष” की विसर्गों का लोप हो जाता है यदि बाद में “अ” को छोड़कर अन्य कोई अक्षर हो। जैसे :-

सः + आगच्छति = स आगच्छति।

एषः + एति = एष एति।

सः + वदति = स वदति।

एषः + हसति = एष हसति।

(घ) विसर्ग से परे “र्” हो तो विसर्ग (र्) का लोप हो जाता है तथा उससे पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ हो जाता है। जैसे :-

पुनः (र्) + रमते = पुना रमते।

निः (र्) + रोग = नीरोगः।

हरिः (र्) + रम्यः = हरी रम्यः।

साधु (र्) + राजते = साधू राजते।

4. विसर्ग को “र्” :- यदि विसर्ग से पहले अ, आ से भिन्न कोई भी स्वर हो और बाद में कोई स्वर या वर्ण के तीसरे, चौथे पाँचवें अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह हों तो विसर्ग के स्थान पर “र्” हो जाता है। जैसे :-

मुनिः + आगतः + मुनिरागतः।

धेनुः + इयम् = धेनुरियम्।

भानुः + उदेति = भानुरुदेति।

मुनिः + याति = मुनिर्याति।

शिशुः + लिखति = शिशुर्लिखति। इत्यादि।

5. विसर्ग को “र्” :-

अ के बाद “र्” के स्थान पर होने वाले विसर्ग को स्वर, वर्ण के तृतीय, चतुर्थ या पञ्चम वर्ण तथा य् र् ल् व् ह इनमें से किसी वर्ण के परे रहते “र्” हो जाता है जैसे :-

प्रातः + एव = प्रातरेव।

पुनः + अपि = पुनरपि।

पुनः = वदति = पुनर्वदति।

मातः + देहि = मातर्देहि।

अभ्यास

1. सन्धि किसे कहते हैं ? प्रमुख भेद उदाहरण सहित लिखो।
2. स्वर सन्धि और विसर्ग सन्धि का भेद उदाहरण सहित समझाइए।
3. स्वर-सन्धि के भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. जशत्व, घटुत्व, श्चुत्व सन्धि में अन्तर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
5. स, श, ष, विसर्ग को किस स्थिति में होता है ? उदाहरण देकर समझाइए।
6. निम्नलिखित सन्धिच्छेदों में सन्धि करते हुए सन्धि का नाम भी लिखिए :-

विद्वान् + लिखति।

विद्या + आलयः।

विद्या + एव।

ने + अनम्।

देव + ऋषिः।

एकदा + एव।

ते + अपि।

पितृ + अर्थम्।

विष्णुः + राजते।

शिवस् + वन्द्य।

सत् + चित् + आनन्दः।

पुनः + अपि।

तद् + लयः।

सुगण + ईशः।

शत्रून् + जयति।

मुने + अत्र।

नर + इन्द्रः।

जगत् + ईशः।

नर + उत्तमः।

रामः + चलति।

गै + अकः।

7. निम्नलिखित पदों का सन्धिच्छेद कीजिए :-

यद्यपि।

देवो वदति।

कोऽयम्

कस्मिंश्चित्।

ऐश्वर्यमदे।

रामश्शेते।

यशोगानम्।

सर्वदैव।

गणेशः।

इत्यादि।

श्रीशः।

ब्रह्मर्षिः।

परोपकारः।

वनौषधिः।

धीरस्तत्र।

